

NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारत में विनिर्माण क्षेत्र के वृद्धि
का पुनर्मूल्यांकन

www.nextias.com

भारत में विनिर्माण क्षेत्र के वृद्धि का पुनर्मूल्यांकन

सन्दर्भ

- चीन की निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ने और भारत द्वारा चीन-प्लस-वन रणनीति से लाभ उठाने के साथ-साथ विकासशील देशों के विनिर्माण पर पड़ने वाले 'चीन के दबाव' (China Squeeze) का मुकाबला करने के प्रयासों के बीच, भारत के विनिर्माण संबंधी आँकड़ों (manufacturing data) की विश्वसनीयता को लेकर प्रश्नों का महत्व फिर से बढ़ गया है।

भारत में विनिर्माण क्षेत्र और वृद्धि का मापन

- विनिर्माण भारत के संरचनात्मक परिवर्तन का केंद्र है, क्योंकि यह बड़े पैमाने पर रोजगार सृजित कर सकता है, तकनीकी क्षमताओं को मजबूत कर सकता है और निर्यात को बढ़ावा दे सकता है।
- भारत में विनिर्माण क्षेत्र के प्रदर्शन को मुख्य रूप से दो संकेतकों के माध्यम से मापा जाता है:
- सकल मूल्य वर्धित (GVA):** विनिर्माण गतिविधियों द्वारा जोड़े गए मूल्य को मापता है और सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के आकलन में सीधे योगदान देता है।

India's Manufacturing Growth Story in Numbers

- Manufacturing sector registered **8.1%** growth in December 2025.
- Manufacturing GVA grew **7.72%** in Q1 and **9.13%** in Q2 of FY26.
- Medium-and high-technology industries now contribute **46.3%** of manufacturing value added.
- Strong business confidence with PMI staying in expansion zone since March 2023.
- The Index of Eight Core Industries reached **175.7**, recording **3.7%** growth in December 2025 YoY.

Source: Economic Survey 2025-26

- औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP):** समय के साथ औद्योगिक उत्पादन की मात्रा में होने वाले परिवर्तनों को मापता है, जिसमें विनिर्माण इसका सबसे बड़ा घटक है।
- GVA मूल्य वर्धित को दर्शाता है और इसमें अनौपचारिक क्षेत्र के अनुमान भी शामिल होते हैं, जबकि IIP मुख्य रूप से संगठित औद्योगिक क्षेत्र में उत्पादन की मात्रा का सूचकांक है।
- इसलिए, हाल के वर्षों में इन दोनों श्रृंखलाओं के बीच दिखाई देने वाला अंतर नीति-निर्माताओं और राष्ट्रीय आय लेखांकन, औद्योगिक नीति तथा आँकड़ा प्रशासन का अध्ययन करने वाले UPSC अभ्यर्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया है।

सकल मूल्य वर्धित (GVA)

- यह किसी आर्थिक क्षेत्र द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को मापता है, जिसमें उत्पादन में उपयोग किए गए मध्यवर्ती आगतों की लागत को घटा दिया जाता है।
- $GVA = \text{उत्पादन का मूल्य} - \text{मध्यवर्ती उपभोग}$
- यह आर्थिक गतिविधि का एक महत्वपूर्ण माप है और सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के अनुमान का आधार बनता है।
- GVA को कृषि, उद्योग और सेवाओं जैसे विभिन्न क्षेत्रों के लिए मापा जा सकता है।
- समग्र स्तर पर, बाजार मूल्यों पर $GDP = \text{आधारभूत मूल्यों पर GVA} + \text{उत्पाद कर} - \text{उत्पाद सब्सिडी}$
- GVA विशेष रूप से विनिर्माण सहित व्यक्तिगत क्षेत्रों के योगदान और अंतर्निहित प्रदर्शन को समझने के लिए उपयोगी है।

औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP)

- यह एक अल्पकालिक संकेतक है, जो समय के साथ औद्योगिक उत्पादन की मात्रा में होने वाले परिवर्तनों को मापता है।
- भारत में IIP में तीन व्यापक क्षेत्र शामिल हैं, अर्थात् खनन, विनिर्माण और विद्युत।
- इसे सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) के राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) द्वारा समय-समय पर तैयार और जारी किया जाता है।

विनिर्माण के आँकड़े क्यों महत्वपूर्ण हैं?

- यह आकलन करने के लिए विश्वसनीय आँकड़े आवश्यक हैं कि क्या सरकारी हस्तक्षेप अपेक्षित परिणाम दे रहे हैं।
- **मेक इन इंडिया कार्यक्रम (2014)** का उद्देश्य घरेलू विनिर्माण और निवेश को मजबूत करना था, जबकि PLI योजना का उद्देश्य रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उत्पादन को प्रोत्साहित करना था।
- बढ़ती वैश्विक प्रतिस्पर्धा के बीच इसका महत्व विशेष रूप से अधिक है। चीन की निर्यात क्षमता विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में कम लागत वाले उत्पादकों पर दबाव डाल सकती है, वहीं बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ **चीन+1 रणनीति** के तहत अपनी आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता ला रही हैं।
- इस अवसर का लाभ उठाने की भारत की क्षमता केवल शीर्षक स्तर की वृद्धि दरों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि विनिर्माण वास्तव में उत्पादन, उत्पादकता और रोजगार के स्तर पर विस्तार कर रहा है या नहीं।

संबंधित मुद्दे और चिंताएँ

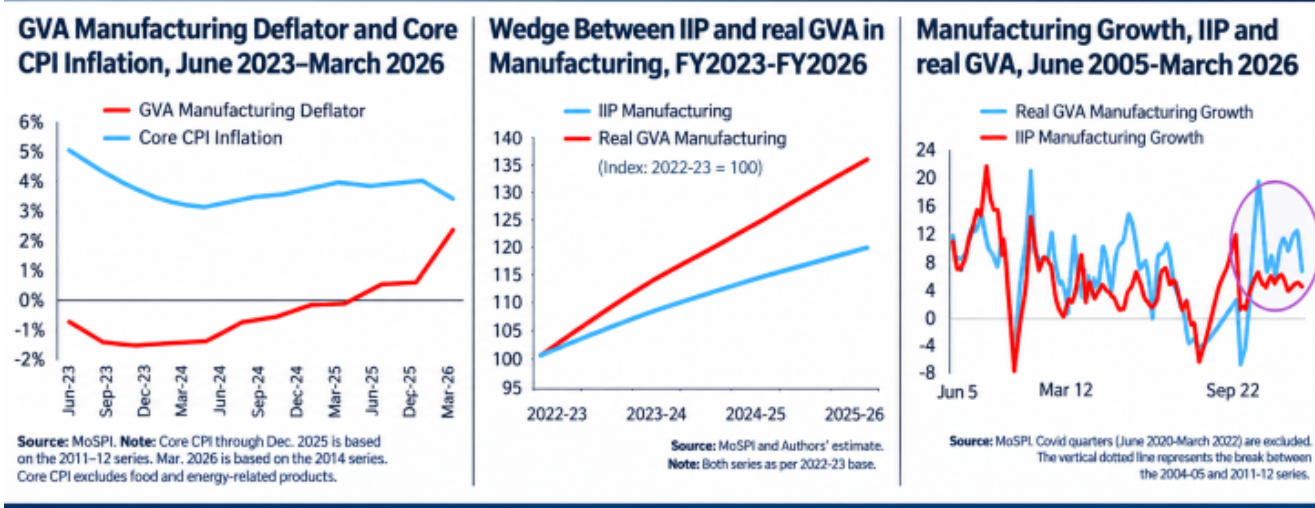
- **विनिर्माण GVA अपस्फीतिकारक (Deflator):** नई GDP गणनाओं में कथित रूप से 2023 और 2025 के बीच लगातार नौ तिमाहियों में विनिर्माण GVA अपस्फीतिकारक में गिरावट दिखाई गई है।
- इसे व्यापक मूल्य प्रवृत्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित करना कठिन है, विशेष रूप से तब जब उपभोक्ता मुद्रास्फीति ने अर्थव्यवस्था-व्यापी निरंतर अपस्फीति का संकेत नहीं दिया।
- थोक मूल्य सूचकांक (WPI) आगत और वस्तु कीमतों से प्रभावित होता है, जबकि GVA अपस्फीतिकारक को मूल्य वर्धित से संबंधित कीमतों को प्रतिबिंबित करना चाहिए।

- वास्तविक GVA और IIP के बीच अंतर: वास्तविक विनिर्माण GVA और IIP के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर दिखाई देता है।
- 2025-26 तक वास्तविक विनिर्माण GVA का स्तर IIP के स्तर से लगभग 15 प्रतिशत अंक अधिक था। इसका अर्थ है कि 2022-23 और 2025-26 के बीच GVA की औसत वार्षिक वृद्धि लगभग 11%, जबकि IIP की वृद्धि लगभग 6% रही।
- अनौपचारिक क्षेत्र को GVA में शामिल किया जाता है, लेकिन IIP में नहीं; हालाँकि, हाल के अनौपचारिक क्षेत्र के अनुमानों में औपचारिक क्षेत्र से प्राप्त जानकारी को आधार बनाया गया है।
- यदि यह अंतर लगातार बना रहता है, तो यह उत्पादकता में वृद्धि, मापन विधियों या आँकड़ों के स्रोतों पर प्रश्न खड़े करेगा।
- GVA और IIP के बीच कमजोर होता संबंध: ऐतिहासिक रूप से, विनिर्माण GVA और IIP की वृद्धि व्यापक रूप से एक-दूसरे के अनुरूप रही है।
- हालाँकि, 2011-12 के आधार वर्ष ढाँचे से संबंधित पद्धतिगत बदलावों के बाद यह संबंध कमजोर होता दिखाई देता है। हाल के GVA वृद्धि आँकड़ों में अपेक्षाकृत स्थिर IIP श्रृंखला की तुलना में अधिक अस्थिरता दिखाई दे रही है।

संबंधित मुद्दे और चिंताएँ

- **विनिर्माण GVA अपस्फीतिकारक (Deflator):** नई GDP गणनाओं में कथित रूप से 2023 और 2025 के बीच लगातार नौ तिमाहियों में विनिर्माण GVA अपस्फीतिकारक में गिरावट दिखाई गई है।
 - इसे व्यापक मूल्य प्रवृत्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित करना कठिन है, विशेष रूप से तब जब उपभोक्ता मुद्रास्फीति ने अर्थव्यवस्था-व्यापी निरंतर अपस्फीति का संकेत नहीं दिया।
 - थोक मूल्य सूचकांक (WPI) आगत और वस्तु कीमतों से प्रभावित होता है, जबकि GVA अपस्फीतिकारक को मूल्य वर्धित से संबंधित कीमतों को प्रतिबिंबित करना चाहिए।
- **वास्तविक GVA और IIP के बीच अंतर:** वास्तविक विनिर्माण GVA और IIP के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर दिखाई देता है।
 - 2025-26 तक वास्तविक विनिर्माण GVA का स्तर IIP के स्तर से लगभग 15 प्रतिशत अंक अधिक था। इसका अर्थ है कि 2022-23 और 2025-26 के बीच GVA की औसत वार्षिक वृद्धि लगभग 11%, जबकि IIP की वृद्धि लगभग 6% रही।
 - अनौपचारिक क्षेत्र को GVA में शामिल किया जाता है, लेकिन IIP में नहीं; हालाँकि, हाल के अनौपचारिक क्षेत्र के अनुमानों में औपचारिक क्षेत्र से प्राप्त जानकारी को आधार बनाया गया है।
 - यदि यह अंतर लगातार बना रहता है, तो यह उत्पादकता में वृद्धि, मापन विधियों या आँकड़ों के स्रोतों पर प्रश्न खड़े करेगा।

- **GVA और IIP के बीच कमजोर होता संबंध:** ऐतिहासिक रूप से, विनिर्माण GVA और IIP की वृद्धि व्यापक रूप से एक-दूसरे के अनुरूप रही है।
 - हालाँकि, 2011-12 के आधार वर्ष ढाँचे से संबंधित पद्धतिगत बदलावों के बाद यह संबंध कमजोर होता दिखाई देता है। हाल के GVA वृद्धि आँकड़ों में अपेक्षाकृत स्थिर IIP श्रृंखला की तुलना में अधिक अस्थिरता दिखाई दे रही है।



संबंधित प्रयास और पहल

भारत ने विनिर्माण को मजबूत करने के लिए कई उपाय किए हैं:

- **मेक इन इंडिया:** निवेश, नवाचार और घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देता है।
- **PLI योजना:** चयनित क्षेत्रों में अतिरिक्त उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन प्रदान करती है।
- **आत्मनिर्भर भारत:** लचीली घरेलू आपूर्ति श्रृंखलाओं और रणनीतिक आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करता है।
- **राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति और PM गति शक्ति:** लॉजिस्टिक्स लागत को कम करने और बुनियादी ढाँचे के एकीकरण में सुधार करने का प्रयास करती हैं।
- **व्यवसाय करने में सुगमता और बुनियादी ढाँचा सुधार:** भारतीय कंपनियों की प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार करने का उद्देश्य रखते हैं।

आगे की राह: विनिर्माण वृद्धि का पुनर्मूल्यांकन

- भारत को विनिर्माण प्रदर्शन पर अंतिम निष्कर्ष के लिए किसी एक संकेतक को आधार बनाने से बचना चाहिए।
- इसके बजाय, नीति-निर्माताओं को GVA, IIP, निर्यात, रोजगार, क्षमता उपयोग और कॉर्पोरेट निवेश से संबंधित आँकड़ों का समग्र रूप से विश्लेषण करना चाहिए।
- MoSPI को नई GDP गणनाओं की व्याख्या करने वाला एक विस्तृत पद्धतिगत विवरण प्रकाशित करना चाहिए, जिसमें विनिर्माण अपस्फीतिकारकों का निर्माण और अनौपचारिक क्षेत्र के अनुमानों की प्रक्रिया शामिल हो।
- अधिक पारदर्शिता स्वतंत्र जाँच को सक्षम बनाएगी और जनता के विश्वास में सुधार करेगी।

- IIP और राष्ट्रीय लेखा आँकड़ों के बीच नियमित सामंजस्य यह पहचानने में सहायता करेगा कि दोनों के बीच अंतर वास्तविक उत्पादकता सुधार को दर्शाता है या सांख्यिकीय समस्याओं को।
- अंततः, भारत की विनिर्माण चुनौती रणनीतिक होने के साथ-साथ सांख्यिकीय भी है। जैसे-जैसे वैश्विक आपूर्ति शृंखलाएँ चीनी प्रतिस्पर्धा और चीन+1 विविधीकरण के अनुरूप समायोजित हो रही हैं, विश्वसनीय आँकड़े यह निर्धारित करने के लिए अनिवार्य हैं कि भारत वास्तव में अपनी विनिर्माण क्षमता मजबूत कर रहा है या केवल उसे अलग तरीके से माप रहा है।

स्रोत: IE

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: भारत की औद्योगिक नीतियों की सफलता का आकलन करने में विश्वसनीय विनिर्माण आँकड़ों के महत्व का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। विनिर्माण सकल मूल्य वर्धित (GVA) और औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) के बीच अंतर से उत्पन्न चिंताओं की चर्चा कीजिए।

